एकक-1

प्रारंभिक परिचय

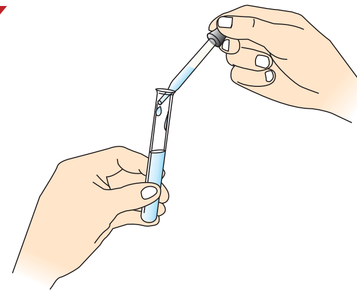

विज्ञान के अध्ययन में प्रयोगशाला कार्यों का विशेष महत्व है क्योंकि वैज्ञानिक सिद्धांतों का विकास और विस्तार प्रयोगशाला कार्यों के आधार पर ही होता है। रसायन एक प्रयोगमूलक विषय है। सैद्धांतिक कक्षाओं में पढ़ी गई अवधारणाएं प्रायोगिक कार्य द्वारा अच्छी तरह से समझी जा सकती है। प्रयोगशाला कार्य से रासायनिक परिघटनाओं को प्रयोगशाला की नियंत्रित परिस्थितियों में जाँच पड़ताल की विधि द्वारा परखने का अवसर मिलता है। दूसरे शब्दों में, इससे आपको जिज्ञासु प्रेक्षक बनने और परिणाम निकालने का भरपूर अवसर मिलता है।

प्रयोगशाला कार्य का प्रशिक्षण, उपकरणों एवं उपस्करों को संभालने एवं संचालित करने की निपुणता प्राप्त करने और प्रयोग करने में सहायक होता है। इस प्रकार से, प्रायोगिक कार्य वैज्ञानिक दृष्टिकोण के उत्थान और सहयोगी आचार-व्यवहार अपनाने में सहायता करता है। प्रयोगशाला में कार्य करना विलक्षण और सृजनात्मक विचारों को क्रियान्वित करके साकार करने का आधार प्रदान करता है।

प्रयोगशाला में कार्य प्रारंभ करके वैज्ञानिक विधियों से परिचित होने तथा प्रायोगिक दक्षता प्राप्त करने से पहले, आपको रसायन प्रयोगशाला से भली-भाँति परिचित होना चाहिए। आपको प्रयोगशाला और अपनी कार्य करने की मेज पर उपलब्ध सुविधाओं पर ध्यान देना चाहिए।

आप देखेंगे कि आपकी मेज पर एक पानी का नल, गैस-टैप, बुन्सेन बर्नर/स्पिरिट लैम्प/मिट्टी के तेल का लैम्प, अभिकर्मक शेल्फ और कूड़ा फेंकने के लिए एक कूड़ेदान की व्यवस्था है। आप पाएंगे कि कुछ अभिकर्मक मेज की शेल्फ पर रखे हैं जबकि कुछ अभिकर्मक दीवारों में बनी शेल्फ पर रखे हैं। मेज की शेल्फ पर रखे अभिकर्मकों की बार-बार आवश्यकता पड़ती है जबकि दीवार की शेल्फ पर रखे अभिकर्मक उपयोग में कम आते हैं। मेज पर उपलब्ध सुविधाओं के अतिरिक्त आप देखेंगे कि दरवाजों और खिड़कियों के सामने वाली दीवार के ऊपरी भाग में छत से थोड़ा नीचे रेचक पंखे (Exhaust fan) लगे हैं। इससे हानिकारक धूम निकालने और प्रयोगशाला में ताज़ी हवा के संचालन में मदद मिलती है। इसी प्रयोजन से प्रयोगशाला में पर्याप्त संख्या में खिड़कियाँ भी होती हैं। इन्हें प्रयोगशाला में कार्य करते समय खुला रखें। प्रयोगशाला में ऐसे प्रयोग करने के लिए, जिनमें धूम उत्पन्न होते हैं, एक धूम धानी की व्यवस्था होती है।

यह दृढ़ परामर्श दिया जाता है कि आप अपनी रसायन प्रयोगशाला, प्रयोगशाला की प्रक्रियाओं और कार्यविधियों तथा विशेष रूप से प्रयोगशाला में कार्य करते समय ली जाने वाली सावधानियों से पूर्णतः परिचित हों।

रसायन प्रयोगशाला का वातावरण इस अभिप्राय में कुछ विशेष होता है कि यह आनंद, खोज और शिक्षा का स्थल हो सकता है। यह कुंठा और खतरे की जगह भी बन सकता है– यदि आप बिना तैयारी के आएं एवं महत्वपूर्ण आँकड़ों को ठीक से न लिखें, तो कुंठा स्थल और यदि आप खतरनाक प्रयोगों को करते हुए सावधानियों का ठीक से ध्यान न रखें, तो खतरे की जगह।

© NCERT not to be republished

प्रयोगशाला कार्य के मूलभूत सिद्धांतों में दक्ष होने के लिए आपको उपस्करों को संचालित करना अवश्य सीखना चाहिए और सुरक्षा उपायों तथा अच्छे प्रयोगशाला आचरण से अवगत होना चाहिए।

प्रयोगशाला में कार्य करने के लिए प्रवेश करने से पहले आप अपने आप को व्यवस्थित करें और प्रयोगशाला कार्य से पहले की तैयारी और प्रायोगिक क्रियाविधि से पूर्णत: अवगत हो लें जिससे आपका कार्य अव्यवस्थित न हो। यदि समूह में प्रयोग करने की आवश्यकता न हो तो अकेले ही प्रयोग करें। कार्य करते समय अपनी विचारशीलता और सहजबुद्धि का प्रयोग करें। यह व्यवहार, वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्राप्त करने की मूलभूत आवश्यकता है। प्रयोगशाला की कॉपी में प्रयोगों का विवरण लिखें। इसके लिए कागज के टुकड़ों और खुले कागजों का उपयोग न करें। सोचें और ऐसे महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर जानने की कोशिश करें जिनसे आपको उन सिद्धांतों का ज्ञान प्राप्त हो जिन पर क्रियाविधि आधारित है।

वैज्ञानिक विचार विमर्श से बहुत कुछ सीखते हैं। इसी प्रकार से आप भी अपने शिक्षकों और सहपाठियों के साथ विचार-विमर्श से लाभान्वित हो सकते हैं। किसी संदेह की स्थिति में पुस्तकों का उपयोग करें क्योंकि पुस्तकें सहपाठियों की तुलना में सूचना का अधिक विश्वसनीय, संपूर्ण एवं उत्तम स्रोत हैं। अन्यथा अपने शिक्षक से पूछें।

सुरक्षा नियमों को यह सुनिश्चित करने के लिए बनाया गया है कि प्रयोगशाला कार्य करते समय आप और आपके साथी सुरक्षित रहें। आपको सदैव सुरक्षा नियमों का पालन करना चाहिए और प्राथमिक-उपचार के बक्से, आग बुझाने के उपकरण इत्यादि की उपलब्धता के स्थल का ध्यान रखना चाहिए।

प्रयोगशाला की किसी चीज को कभी न चखें (प्रयोगशाला के विषैले पदार्थों पर हमेशा 'विष' नहीं लिखा होता।) प्रयोगशाला को भोजन-स्थल न बनाएं। प्रयोगशाला के काँच के उपकरणों का उपयोग कभी-भी खाने-पीने के लिए न करें। प्रयोगशाला में अकेले कार्य न करें। यदि अधिक देर तक कार्य करना आवश्यक हो तो अपने शिक्षक से अनुमति प्राप्त कर लें।

1.1 रसायन प्रयोगशाला में अनुमत एवं निषिद्ध व्यवहार

निम्नलिखित व्यवहार आपको प्रयोगशाला तकनीक में दक्षता प्राप्त करने का मार्गदर्शन देने हेतु लिखे जा रहे हैं जिससे प्रयोगशाला एक सुखद कार्यस्थल हो। आपको निम्नलिखित प्रक्रियाओं का पालन करना चाहिए-

- प्रयोगशाला में कार्य करते समय सुरक्षा-चश्मा, कोट और जूते पहनें।
- किसी भी अभिकर्मक बोतल में रखे पदार्थ का उपयोग करने से पहले उस पर लगे नाम-पत्र को ध्यानपूर्वक पढ़ कर जांच लें।
- क्रियाविधियों और सावधानियों को ध्यानपूर्वक पढ़ें और उनका अनुसरण करें।
- कार्य करने की मेज पर अभिकर्मक की बोतल छोड़ देना खराब आचरण है; कार्य समाप्त होते ही तुरन्त बोतल पर ठीक से ढक्कन लगाएं और शेल्फ पर यथास्थान रखें।

- यदि आपके कार्यस्थल पर अभिकर्मक की कोई बोतल खाली हो तो प्रयोगशाला परिचारक से इसे भरने के लिए कहें।
- यदि आपको दीवार की शेल्फ से किसी अभिकर्मक की आवश्यकता हो तो परखनली अथवा बीकर को वहाँ ले जाएं। बोतल को अपने कार्यस्थल पर ले कर न आएं।
- जब तक आपको सलाह न दी गई हो, **अधिक अभिकर्मक का उपयोग न करें।**
- **अप्रयुक्त रसायनों को भंडारण बोतल में वापस कभी न डालें।** यदि आपसे पदार्थ को सही बोतल में वापिस डालने में कोई गलती हो गई तो दूसरे विद्यार्थियों का प्रयोग बिगड़ सकता है।
- जब तक प्रयोग में आवश्यक न हो, **रसायनों को न मिलाएं**। इस नियम का पालन न करने से भयंकर दुर्घटना की संभावना हो सकती है।
- भंडारित विलयनों और अभिकर्मक बोतलों से अभिकर्मक निकालने के लिए **केवल अच्छी तरह साफ करे गए ड्रॉपर, स्पैचुला या पिपेट इत्यादि का ही प्रयोग करें।**
- **बोतल के डाट को मेज पर न रखें।** इस पर अशुद्धियाँ चिपक सकती हैं और बोतल की सामग्री दूषित हो सकती है। जब कभी आपको किसी बोतल से अभिकर्मक लेना हो तो बोतल को एक हाथ से उठाएं और डाट को दूसरे हाथ से निकालें या लगाएं तथा साफ ग्लेज़ टाइल पर रखें। सूखे ठोस अभिकर्मकों को निकालने के लिए स्पैचुला का प्रयोग करें और इन्हें, वॉच ग्लास पर रखें, **कभी भी फिल्टर पत्र का उपयोग न करें। अभिकर्मकों को कभी भी अपनी हथेली पर न रखें और न ही उंगलियों से छुएं।**
- माचिस की तीली, लिटमस पेपर, टूटा काँच का उपकरण, फिल्टर पेपर या अन्य कोई **अघुलनशील पदार्थ सिंक में अथवा फर्श पर कभी न फेकें।** अपनी सीट पर उपलब्ध कूड़ेदान का उपयोग करें। केवल अपशिष्ट तरल ही नल से बहते पानी के साथ सिंक में फेंकने चाहिए जिससे कोई गन्ध न आए और कुछ भी सिंक में न चिपके तथा तरल पदार्थ पानी के साथ बह जाएं।
- **जल तथा गैस का अपव्यय न करें।** जब कभी नलों का उपयोग न हो रहा हो तो इन्हें बंद कर दें। यदि कुछ गरम न हो रहा हो तो प्रदीप्त बर्नर को जाली के नीचे न छोड़ें। उसे बुझा दें।
- गरम उपकरणों को सीधे कार्य करने की मेज पर नहीं रखना चाहिए क्योंकि इससे मेज खराब हो सकती है। इन्हें ग्लेज़ टाइल अथवा जाली पर रखें।
- मोटे काँच से बने उपकरण जैसे अंशांकित सिलिंडर (graduated cylinder), बोतलें, मापक फ्लास्क (measuring flask) इत्यादि सीधे ज्वाला पर गरम न करें क्योंकि यह टूट जाते हैं। इसके अतिरिक्त गरम करने से काँच विकृत हो जाता है तथा नापने के उपकरण पर लगे अंशाकन प्रामाणिक नहीं रह जाते। यदि परखनली को उसमें भरे हुए द्रव की सतह से ऊपर गरम करा जाए तो यह टूट सकती है। क्रूसिबल तप्त लाल होने तक गरम की जा सकती हैं।

अंतर्राष्ट्रीय आपदा प्रतीक

हानिकारक

ज्वलनशील

संक्षारक

आविषी

विस्फोटक

ऑक्सीकारक

रेडियोसक्रिय

***नोट** – रसायनिक बोतलों पर इन* प्रतीकों को देखें।

© NCERT not to be republished

- द्रव से भरी परखनली का मुँह अपनी या अपने पड़ोसी की ओर करके गरम न करें क्योंकि सामग्री के छिटककर निकलने से आपको या आपके पड़ोसी को नुकसान पहुँच सकता है (चित्र 1.1)।
- कार्य समाप्त होते ही सभी उपकरण साफ करके यथास्थान रख दें। गंदा कार्यस्थल और उपकरण, लापरवाही की आदत की ओर इंगित करते हैं तथा इनसे प्रयोग की सफलता बाधित होती है।

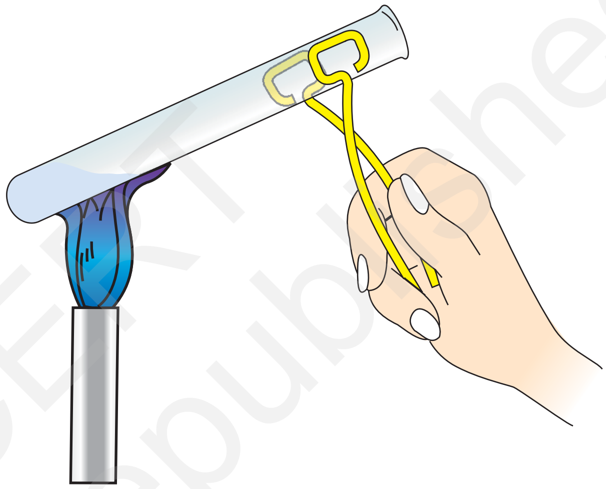

***चित्र 1.1** – परखनली में विलयन गरम करने की सही विधि*

© NCERT not to be republished

काँच के साफ होने का संकेत यह है कि धोने के बाद इसे पकड़ने से पानी बह जाता है और बूंदें सतह पर चिपकी नहीं रहतीं। यदि बूंदें काँच की सतह पर चिपकी रह जाएं तो इसका अर्थ है कि उपकरण चिकना है। उस स्थिति में इसे 5% NaOH विलयन अथवा साबुन से धोना चाहिए और फिर अच्छी तरह पानी से धो लेना चाहिए। यदि यह अब भी गंदा हो या कोई दाग लगा रह गया हो तो साफ करने के लिए गरम सांद्र नाइट्रिक अम्ल का उपयोग करना चाहिए। यदि धब्बा फिर भी साफ न हुआ हो तो क्रोमिक अम्ल (जिसे क्रोमोसल्फ्यूरिक अम्ल भी कहते हैं) का उपयोग किया जा सकता है। एक लिटर क्रोमिक अम्ल बनाने के लिए 100 g पोटैशियम डाइक्रोमेट को एक लिटर सांद्र सल्फ्यूरिक अम्ल में घोला जाता है। **यह अत्यधिक संक्षारक द्रव होता है और इसके त्वचा अथवा कपड़ों के संपर्क में आने से बचाव के लिए प्रत्येक सावधानी बरतनी चाहिए।**

- ऐसे प्रयोग करने के लिए जिनमें विषैले तथा जलन उत्पन्न करने वाले धूम निकलते हों, धूम धानी का उपयोग करना चाहिए।
- प्रयोगशाला में कार्य करते हुए दरवाजे और खिड़कियाँ खुली रखें और रेचक पंखा

चला दें जिससे विषैले धूम तेज़ी से खिंच कर बाहर निकल जाएं तथा शुद्ध वायु के संचार में सहायता मिले।

- यदि आप उपरोक्त अनुमत और निषिद्ध व्यवहारों का अनुसरण करेंगे तो निश्चित ही आपका मूलभूत वैज्ञानिक तकनीकों को सीखने का अनुभव सुखद होगा।

आगे के पृष्ठों में आपको रसायन प्रयोगशाला में कार्य करने के लिए आवश्यक प्रयोगशाला उपस्करों, क्रियाविधियों और तकनीकों से अवगत कराया जाएगा। आइए हम रसायन में प्रयुक्त होने वाली विश्लेषण की विधियों के परिचय से प्रारंभ करें।

1.2 विश्लेषण की विधियाँ

तत्वों और उनके यौगिकों की पहचान भौतिक गुणों जैसे भौतिक अवस्था, रंग, गंध, चमक, गलनांक, क्वथनांक, ऊर्ध्वपातन, गरम करने पर ज्वाला को रंग प्रदान करना, कठोरता, क्रिस्टलीय अथवा अक्रिस्टलीय अवस्था, जल और अन्य विलायकों में विलेयता इत्यादि के आधार पर की जाती है; परन्तु कभी-कभी केवल भौतिक अवस्था के आधार पर पदार्थ की पहचान करना असंभव होता है, इसलिए पदार्थ की पहचान के लिए रासायनिक विधियाँ जैसे क्षार, अम्ल, ऑक्सीकरण कर्मक, अपचायी कर्मक और अन्य यौगिकों के साथ अभिक्रिया, काम में ली जाती है। किसी पदार्थ का गुणात्मक और मात्रात्मक रासायनिक संघटन सुनिश्चित करने के लिए इसका विश्लेषण किया जाता है। इसलिए, विश्लेषण, **गुणात्मक** अथवा **मात्रात्मक** हो सकता है। **गुणात्मक विश्लेषण** पदार्थ में तत्वों का संघटन जानने के लिए किया जाता है; इसमें बनने वाले आयनों और पदार्थ में उपस्थित अणुओं की पहचान करना शामिल है। गुणात्मक विश्लेषण की विधियाँ अनेक प्रकार की हैं। इनसे हम न केवल उन तत्वों को ज्ञात कर सकते हैं जिनसे पृथ्वी पर उपस्थित पदार्थ बने हैं, बल्कि पृथ्वी से दूर खगोलीय पिंडों के संघटन को भी ज्ञात कर सकते हैं, **मात्रात्मक विश्लेषण** पदार्थों में उपस्थित अवयवों की मात्रा सुनिश्चित करने में सहायता करता है। यह ऊर्जा परिवर्तन इत्यादि को मापने में भी सहायता करता है।

1.3 मूलभूत प्रयोगशाला उपस्कर और क्रियाविधियाँ

गरम करना, छानना, निथारना, आयतन मापना तथा ठोसों और द्रवों को तोलना, आदि प्रयोगशाला की कुछ ऐसी क्रियाविधियाँ हैं; जिनकी रसायन प्रयोगशाला में प्रयोग करते हुए बार-बार आवश्यकता पड़ती है। इस कार्य के लिए आवश्यक कुछ विशेष उपस्कर चित्र 1.2 एवं चित्र 1.3 में दिखाए गए हैं। आप इनके उपयोग के विषय में प्रयोग करते हुए जानेंगे। कुछ सामान्य उपकरणों के उपयोग के निर्देश आगे दिए गए हैं।

© NCERT not to be republished

चित्र 1.2 *– प्रयोगशाला के सामान्य उपस्कर*

© NCERT not to be republished

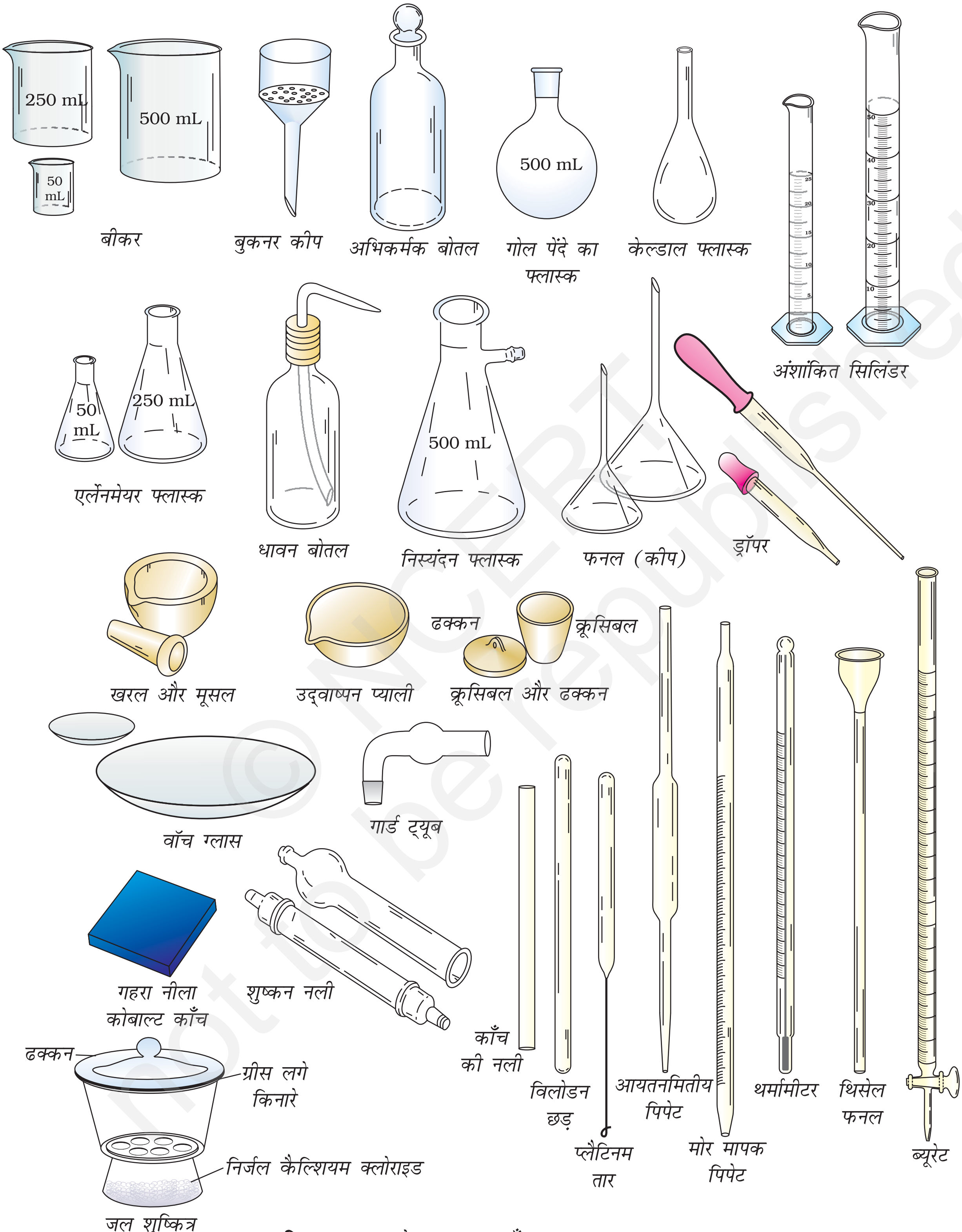

चित्र 1.3 *– प्रयोगशाला का काँच का सामान्य उपकरण*

परखनली

विभिन्न आयतनों की परखनलियाँ उपलब्ध हैं परन्तु वर्तमान स्तर पर रसायन का प्रयोगात्मक कार्य करने के लिए सामान्यत: 125 mm (लंबाई) × 15 mm (व्यास), 150 mm (लंबाई) × 15 mm (व्यास) तथा 150 mm (लंबाई) × 25 mm (व्यास) की परखनलियाँ प्रयोग में लाई जाती हैं। मुँह पर किनारा बनी हुई और बिना किनारे वाली परखनलियाँ भी उपलब्ध हैं। कम मोटाई की परखनलियाँ ऐसी अभिक्रियाएं करने के प्रयोग में लाई जाती हैं जिनमें गरम करने की आवश्यकता नहीं होती या बहुत कम देर गरम करना होता है। **अभिक्रिया करते समय परखनली का केवल एक-तिहाई भाग ही भरना चाहिए**। बड़े व्यास वाली परखनली को **क्वथन नली (बॉयलिंग ट्यूब)** कहते हैं। इसका प्रयोग तब करते हैं जब अधिक विलयन गरम करने की आवश्यकता होती है। परखनली में कोई मिश्रण या विलयन गरम करने के लिए इसे परखनली होल्डर से पकड़ा जाता है। विलयन भरी परखनलियों को सीधा खड़ा रखने के लिए परखनली स्टैंड का प्रयोग करना चाहिए (चित्र 1.4)।

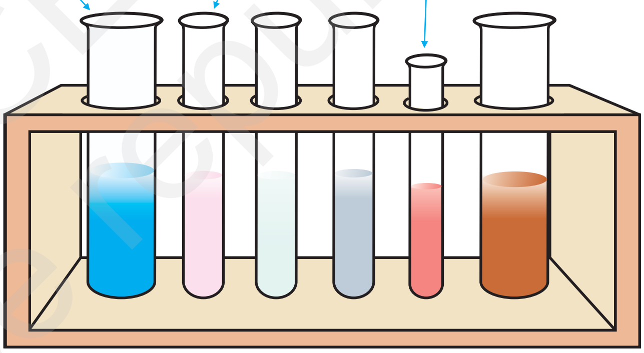

चित्र 1.4 – परखनली स्टैंड में रखी परखनलियाँ एवं क्वथन नली (बॉयलिंग ट्यूब)

फ्लास्क

अधिकांशत: रसायन प्रयोगशाला में गोल पेंदे के फ्लास्क, तथा शंक्वाकार फ्लास्क (इसे एर्लेनमेयर फ्लास्क भी कहते हैं) प्रयोग में लाए जाते हैं। यह 5 mL से 2000 mL क्षमता तक विभिन्न क्षमताओं में उपलब्ध हैं। आकार और प्रकार का चयन अभिक्रिया के प्रकार और प्रयोग में प्रयुक्त होने वाले विलयन की मात्रा पर निर्भर करता है। गोल पेंदे के फ्लास्क में मिश्रण गरम अथवा पश्चवाह (reflux) करने के लिए सामान्यत: सीधे ही ज्वाला/बालू ऊष्मक/जल ऊष्मक का प्रयोग किया जाता है। शंक्वाकार फ्लास्कों का उपयोग कमरे के ताप पर या कम ताप पर प्रयोग करने के लिए किया जाता है। यह विशेषकर आयतनमापी विश्लेषण (volumetric analysis) के लिए प्रयुक्त होते हैं।

बीकर

5 mL से 2000 mL तक की क्षमता के बीकर उपलब्ध हैं तथा इन्हें विलयन बनाने, अवक्षेपण अभिक्रिया करने और विलायक का वाष्पन इत्यादि करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है।

पृथक्कारी कीप

इन्हें अमिश्रणीय द्रवों को पृथक करने के प्रयोग में लाया जाता है। अनेक आमाप और आकार की पृथक्ककारी कीप (separating funnel) उपलब्ध हैं (चित्र 1.5)।

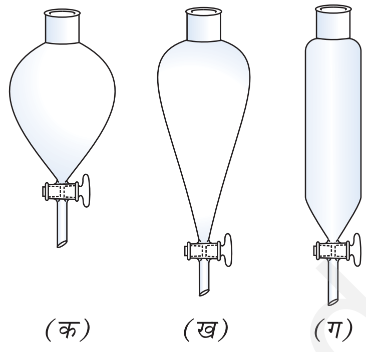

चित्र 1.5 *- विभिन्न आकार की पृथक्कारी कीप*

संघनित्र

संघनित्र (Condenser) वाष्प को वापस द्रव में संघनित करने के लिए प्रयोग में लाए जाते हैं। सामान्यत: दो प्रकार के संघनित्र प्रयोग में लाए जाते हैं, (क) वायु संघनित्र (ख) जल संघनित्र। वायु संघनित्र को चित्र 1.6 (क) में दिखाया गया है। वायु संघनित्र विभिन्न लम्बाई और व्यास की काँच की नली के बने होते हैं। इनसे गरम वाष्प की ऊष्मा तेजी से आसपास की वायु को अंतरित हो जाती है और वाष्प संघनित हो जाती है।

जल संघनित्र में एक आंतरिक नली के बाहर जैकेट होती है (चित्र 1.6 ख) जिसमें जल के परिसंचारण (circulation) के लिए अंतर्गम (inlet) और निकास (outlet) होते हैं। अंतर्गम को नल से जोड़ा जाता है। इसमें गरम वाष्प की ऊष्मा बाहर के जल को अंतरित हो जाती है।

वायु संघनित्र उच्च क्वथनांक वाले द्रवों और विलयनों का पश्चवाह अथवा आसवन करने के लिए प्रयोग में लाए जाते हैं। कम क्वथनांक वाले द्रवों के लिए जल संघनित्र का प्रयोग करते हैं।

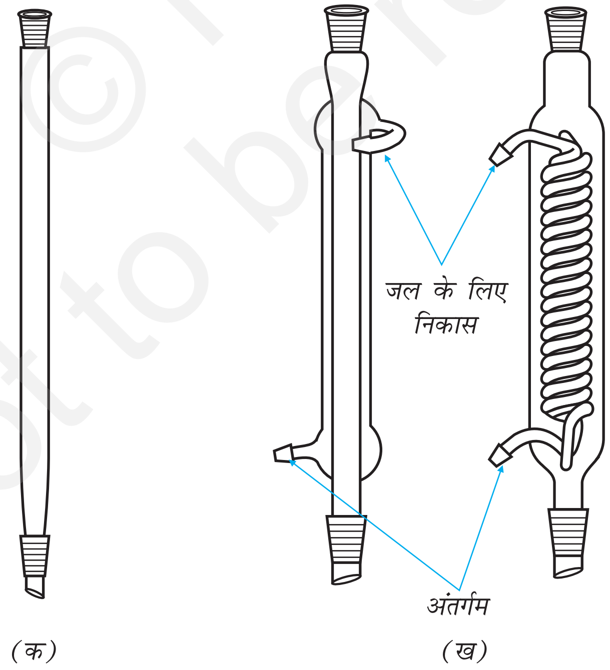

चित्र 1.6 *- (क) वायु संघनित्र (ख) जल संघनित्र*

घर्षित काँच के जोड़

ऊपर वर्णित उपकरणों में कार्क का उपयोग कम करने के लिए आजकल अंतर्गम और निकास पर घर्षित काँच के जोड़ लगा दिए जाते हैं। घर्षित काँच के जोड़ लगे विभिन्न आमाप के उपकरण उपलब्ध हैं। (चित्र 1.7)।

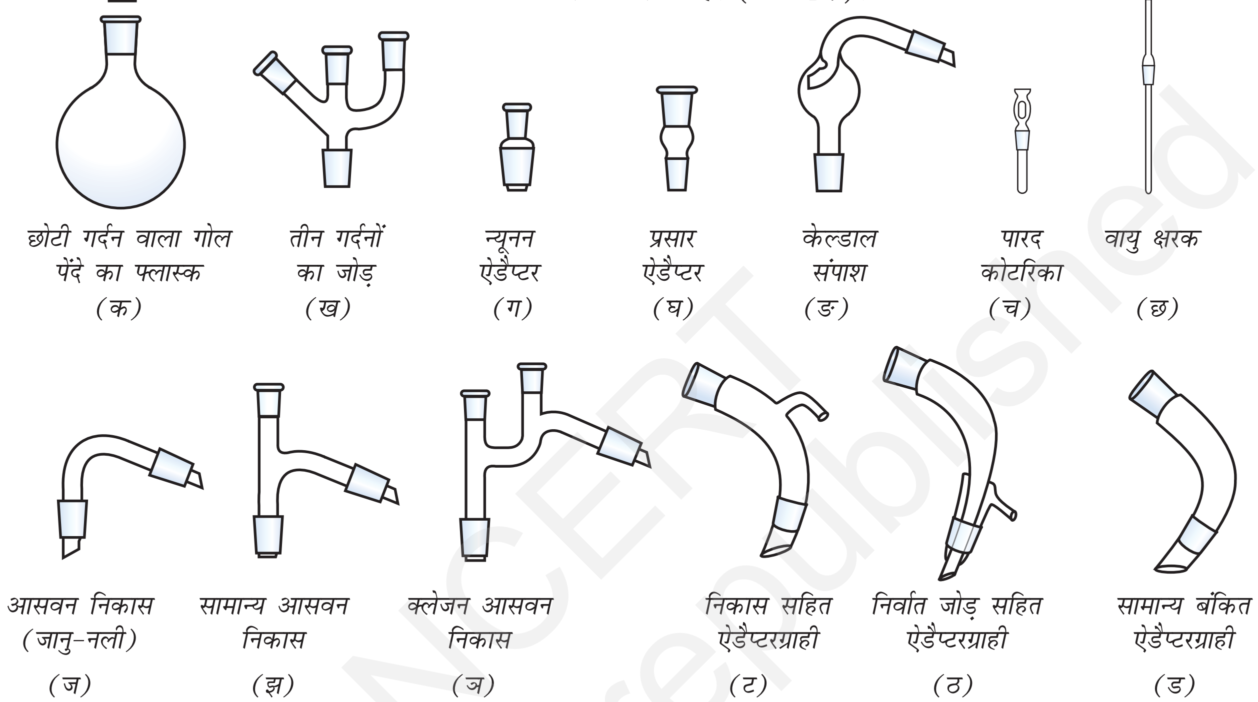

चित्र 1.7 – घर्षित काँच के जोड़ों वाले उपकरण

© NCERT not to be republished

1.4 अभिकर्मकों की बोतलों का प्रहस्तन (handling)

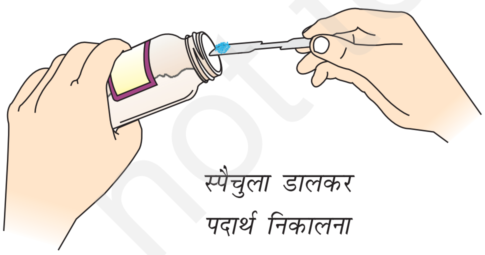

चित्र 1.8 – अभिकर्मक की बोतल से ठोस पदार्थ निकालना

अभिकर्मकों की बोतलों से ठोस और द्रव अभिकर्मकों को निकालने की उचित विधि क्रमशः चित्र 1.8 और चित्र 1.9 में दिखाई गई है। बोतल से अभिकर्मक निकालने से पहले उस पर लगे लेबल पर लिखे नाम की दो बार जाँच करके सुनिश्चित कर लें कि सही अभिकर्मक निकाला जा रहा है। द्रव अभिकर्मक या तो संकरे मुँह की काँच के डाट वाली बोतलों में रखे जाते हैं या फिर ड्रापिंग बोतलों में रखे जाते हैं। डाट वाली बोतलों को प्रयोग में लाते समय डाट को एक साफ काचित टाइल (glazed tile) पर रखें। डाट को कभी भी मेज पर न रखें क्योंकि मेज पर लगी धूल इस पर चिपक कर अभिकर्मक को अशुद्ध कर सकती है। चित्र 1.9 में बोतल से द्रव निकालने का सही ढंग दिखाया गया है। बोतल से बीकर में सीधे ही द्रव डालने के लिए बोतल के मुँह पर एक काँच की छड़ इस प्रकार पकड़नी चाहिए कि द्रव छड़ के सहारे बिना छिटके बहे।

प्रथम – लेबल को दो बार पढ़ें

द्वितीय – डाट को पकड़ें और बोतल को टेढ़ा करके डाट को गीला करें।

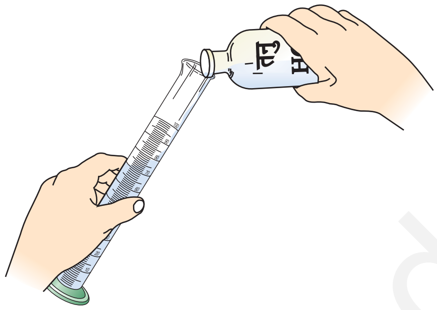

तृतीय – द्रव को अंतरित करें। नम करी हुई गर्दन और सिरा पहली बूँद बाहर गिरने से रोकता है।

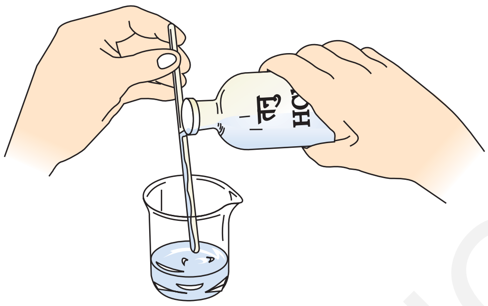

द्रव को काँच की छड़ के सहारे पलटें

बीकर से द्रव डालते समय विलोडन छड़ को ऐसे पकड़ें

***चित्र 1.9** – द्रवों को अंतरित करने का ढंग*

यदि द्रव अंतरित करने के लिए ड्रापर का प्रयोग किया जाए तो अंतरित करते समय ड्रापर को पात्र की सामग्री के सम्पर्क में नहीं आना चाहिए। द्रव को ड्रापर से अंतरित करने का सही ढंग चित्र 1.10 में दिखाया गया है। बोतलों के ड्रापर आपस में बदलने नहीं चाहिए। आजकल ड्रापिंग बोतलें प्रयोग में लाना अधिक सुरक्षित और सुविधाजनक माना जाता है।

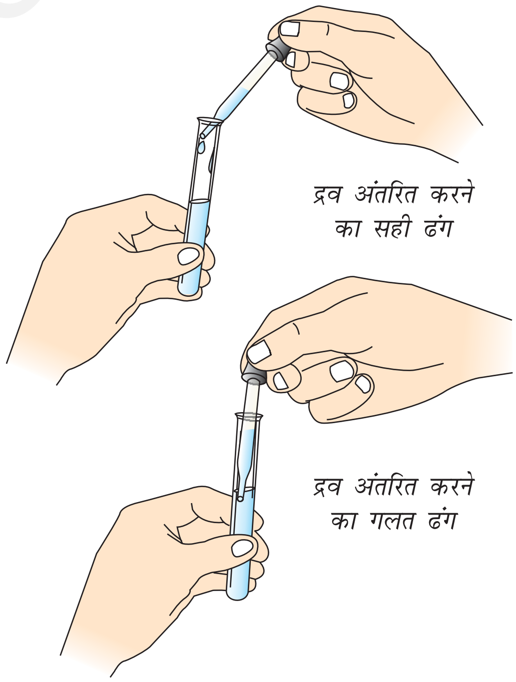

***चित्र 1.10** – ड्रापर से द्रव आंतरित करना*

1.5 तापन युक्तियाँ

प्रयोगशाला में गरम करने के लिए गैस बर्नर, स्पिरिट लैम्प अथवा किरोसीन लैम्प का प्रयोग किया जा सकता है। प्रयोगशाला में अधिकतर प्रयोग में आने वाला गैस बर्नर बुन्सेन बर्नर है (चित्र 1.11)। बुन्सेन बर्नर के विभिन्न भाग चित्र 1.12 में दिखाए गए हैं। इनका विस्तृत वर्णन आगे दिया गया है–

© NCERT not to be republished

बुन्सेन बर्नर

(क) बुन्सेन बर्नर के भाग

1. आधार

धातु से बना भारी आधार पार्श्व नली, जिसे गैस नली कहते हैं, से जुड़ा रहता है। स्रोत से आई गैस, नली द्वारा बर्नर में प्रवेश करती है तथा निपिल अथवा नॉज़ॅल नामक छोटे से छिद्र से निकलकर बर्नर की नली में उच्च दाब पर पहुँचती है और बर्नर की नली के ऊपरी भाग में जलाई जा सकती है।

2. बर्नर नली

यह एक लम्बी धात्विक नली होती है जिसके निचले सिरे के पास दो छिद्र एक-दूसरे के ठीक आमने-सामने स्थित होते हैं और ये वायु-निकास बनाते हैं। नली को आधार की चूड़ियों पर कसा या खोला जा सकता है। नॉज़ॅल से आने वाली गैस वायु निकास से आने वाली वायु से मिश्रित होकर नली के ऊपरी छोर पर जलती है।

3. वायु नियंत्रक

यह एक छोटा सा बेलनाकार धात्विक खोल (sleeve) होता है। जिसमें ठीक आमने-सामने दो छिद्र होते हैं। जब इसे बर्नर की नली पर लगा दिया जाता है तो यह बर्नर की नली के वायु निकास को ढक लेती है। निकास से वायु के प्रवाह को नियंत्रित करने के लिए खोल को घुमा कर छिद्र का आकार समायोजित कर लिया जाता है।

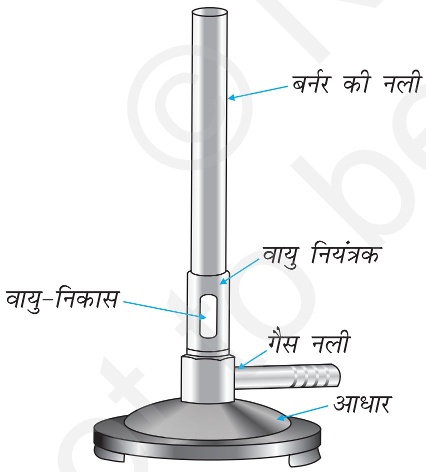

चित्र 1.11 - बुन्सेन बर्नर

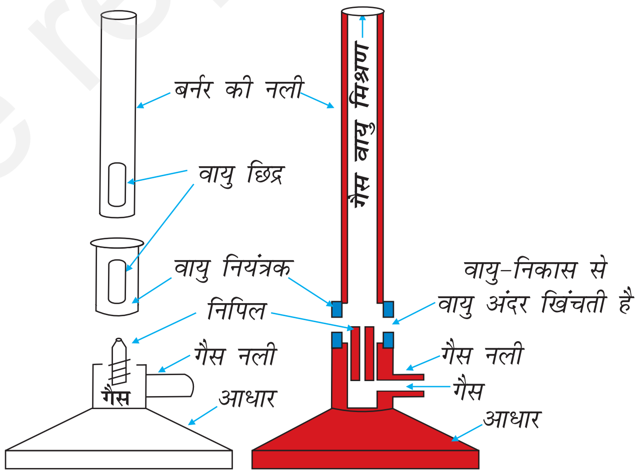

चित्र 1.12 - बुन्सेन बर्नर के भाग

यदि निकास बंद हो और गैस को जलाया जाए तो ज्वाला बड़ी और दीप्त (luminous) होगी (धुएं वाली और पीली)। ज्वाला से निकलता प्रकाश आंशिक रूप से जले हुए ईंधन के गरम कार्बन कणों द्वारा विकिरण के कारण होता है। इस स्थिति में ज्वाला का ताप कम होता है। यदि वायु-निकास पर खोल का समायोजन ऐसा

हो कि वायु मिश्रित गैस ज्वाला में पहुंचे तो ज्वाला कम दीप्त और अन्त में नीली हो जाती है। जब वायु का प्रवाह ठीक से समायोजित होता है तो ज्वाला का ताप बहुत अधिक हो जाता है। इसे अदीप्त ज्वाला (non-luminous) कहते हैं। ज्वाला के विभिन्न मंडल (zone) नीचे चित्र 1.13 में दिखाए गए हैं।

बुन्सेन बर्नर की ज्वाला में स्पष्ट दिखाई देने वाले तीन प्रमुख भागों का वर्णन नीचे किया गया है।

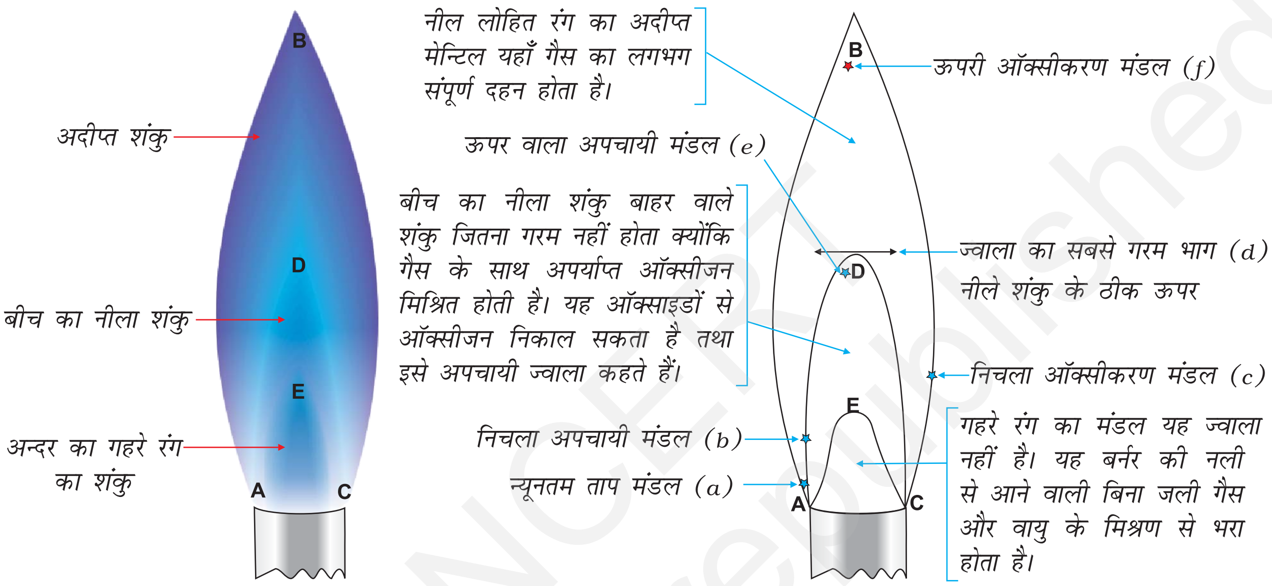

चित्र 1.13 – बुन्सेन बर्नर की ज्वाला के विभिन्न मंडल

(ख) बुन्सेन बर्नर की ज्वाला के प्रमुख भाग

1. अंदर का गहरे रंग का शंकु, A E C

यह ज्वाला का सबसे अंदर वाला गहरे रंग का शंकु होता है, जो बर्नर की नली के ठीक ऊपर होता है। यह बिना जली गैसों से बना होता है। यह मंडल, ज्वाला का सबसे कम गरम भाग होता है और यहाँ कोई दहन नहीं होता।

2. बीच का नीला शंकु, A D C E A

यह ज्वाला का बीच वाला भाग होता है। जब वायु-निकास थोड़ा सा बंद होता है तो यह दीप्त हो जाता है। इस भाग की दीप्ति गैस के आंशिक दहन से उत्पन्न कार्बन कणों की उपस्थिति के कारण होती है। यह कण तापदीप्त तक गरम होकर चमकने लगते हैं परंतु जलते नहीं। इस भाग में दहन संपूर्ण न हो पाने के कारण ताप बहुत अधिक नहीं होता।

3. बाहरी अदीप्त शंकु, A B C D A

यह बैंगनी रंग का बाहरी शंकु है। यह ज्वाला का सबसे गरम भाग होता है। यह वायुमंडल के सीधे संपर्क में रहता है और इस मंडल में दहन लगभग संपूर्ण हो जाता है।

© NCERT not to be republished

बुन्सेन ने ज्वाला के इन तीन प्रमुख भागों में छः मंडल अभिनिर्धारित किए हैं–

(i) ऊपर वाला ऑक्सीकरण मंडल (f)

इसका स्थान **ज्वाला की अदीप्त नोंक पर** होता है, जो वायु में रहती है। ज्वाला के भीतरी भागों की अपेक्षा यहाँ ऑक्सीजन का आधिक्य होता है। ताप उतना अधिक नहीं होता जितना कि नीचे वर्णित मंडल (*c*) में। यह भाग उन आक्सीकरण प्रक्रमों के लिए प्रयोग में लाया जा सकता है जिनमें ज्वाला के अधिकतम ताप की आवश्यकता नहीं होती।

(ii) ऊपर वाला अपचायी मंडल (e)

यह मंडल **अंदर वाले नीले शंकु की नोक पर** स्थित होता है और तापदीप्त कार्बन से भरपूर होता है। यह धातु ऑक्साइडों की पर्पटियों को धातु में अपचित करने के लिए विशेष उपयोगी होता है।

(iii) ज्वाला का सबसे गरम भाग (d)

यह संगलन मंडल है। यह ज्वाला की लगभग एक तिहाई ऊँचाई पर मेन्टिल यानी बाहरी शंकु में अंदर और बाहर से लगभग बराबर दूरी पर स्थित होता है। पदार्थ के संगलन की जाँच इस भाग में की जा सकती है। पदार्थों अथवा पदार्थों के मिश्रण का आपेक्षिक वाष्पन भी इस भाग में जाँचा जा सकता है।

(iv) निचला ऑक्सीकरण मंडल (c)

यह मेन्टिल के बाहरी किनारे पर ज्वाला के निचले भाग में स्थित होता है और इसे बोरेक्स अथवा सोडियम कार्बोनेट की बीड (मणिका) में घुले हुए पदार्थ के ऑक्सीकरण के लिए प्रयोग में लाया जा सकता है।

(v) निचला अपचायी मंडल (b)

यह बाहरी मेन्टिल के भीतरी किनारे पर नीले शंकु के पास स्थित होता है और यहाँ अपचायी गैसें वायु की ऑक्सीजन से मिश्रित होती हैं। यह (*e*) से कम शक्तिशाली अपचायी मंडल है और इसे गालित बोरेक्स या ऐसी ही बीड के अपचयन के लिए काम में लाया जा सकता है।

(vi) ज्वाला का न्यूनतम ताप मंडल (a)

ज्वाला के (*a*) मंडल का ताप न्यूनतम होता है। यह वाष्पित हो सकने वाले पदार्थों के प्रेक्षण में यह सुनिश्चित करने के लिए प्रयोग में लाया जाता है कि वे ज्वाला को रंग प्रदान करते हैं अथवा नहीं।

(ग) बुन्सेन बर्नर की ज्वाला का वापस लौटना (striking back)

ज्वाला का वापस लौटना ऐसी परिघटना है जिसमें ज्वाला बर्नर की नली पार करके आधार के पास नॉज़ॅल पर जलने लगती है। ऐसा तब होता है जब निकास पूर्णतः खुला होता है।

© NCERT not to be republished

अधिक वायु और कम गैस का प्रवाह ज्वाला को अनियमित कर देता है और यह वापस लौटती है। बर्नर की नली अत्यधिक गरम हो जाती है और इसे छूने से जल सकने की संभावना होती है। यह जुड़ी हुई रबर की नली को पिघला भी सकती है। यदि ऐसा हो जाए तो बर्नर बुझाकर नल के नीचे रखकर पानी से ठंडा करें और निकास को कम खुला रखकर इसे दोबारा सुलगाएं।

स्पिरिट लैम्प

यदि प्रयोगशाला में बुन्सेन बर्नर उपलब्ध न हो तो गरम करने के लिए स्पिरिट लैम्प का उपयोग किया जा सकता है। यह एक ऐसी युक्ति है जिसमें रूई के धागे की बत्ती का एक सिरा स्पिरिट के पात्र में डूबा रहता है और बत्ती का दूसरा सिरा पात्र के ऊपरी छोर पर नॉज़ॅल से बाहर निकला रहता है (चित्र 1.14)। केशिका क्रिया (Capillary action) द्वारा स्पिरिट बत्ती के ऊपरी सिरे पर पहुँच जाती है और जलाई जा सकती है। ज्वाला अदीप्त (घूम रहित) होती है अतः प्रयोगशाला में सभी प्रकार के गरम करने के प्रयोजनों में उपयोग में लाई जा सकती है। लैम्प बुझाने के लिए जलती हुई बत्ती पर लैम्प का ढक्कन रख देते हैं। **जलते हुए बर्नर को कभी भी फूंककर बुझाने की कोशिश न करें।**

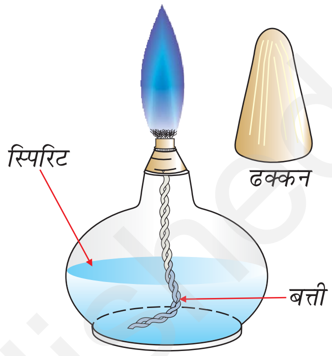

चित्र 1.14 – स्पिरिट लैम्प

मिट्टी के तेल से गरम करने का लैम्प

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.) ने मिट्टी के तेल का एक ऐसा लैम्प विकसित किया है जो स्पिरिट लैम्प का परिवर्तनीय और कम लागत का विकल्प है। इसे ऐसी प्रयोगशालाओं में ऊष्मा के स्रोत के रूप में प्रयोग में लाया जा सकता है जहाँ स्पिरिट और गैस-बर्नर उपलब्ध न हों। मिट्टी के तेल के लैम्प के भाग चित्र 1.15 में दिखाए गए हैं।

लैम्प की कार्यप्रणाली

आधे से अधिक पात्र को मिट्टी के तेल से भर लिया जाता है। बत्तियों को सुलगाने के लिए बाहरी खोल निकाल दिया जाता है। खोल को यथा स्थान रखने पर चारों बत्तियों की ज्वालाएं एक साथ मिलकर एक बड़ी घूम रहित नीली ज्वाला बना देती हैं। जलता हुआ बर्नर बाहरी खोल के ऊपरी भाग को धातु अथवा ऐस्बेस्टस की शीट से केवल ढक देने से बुझाया जा सकता है।

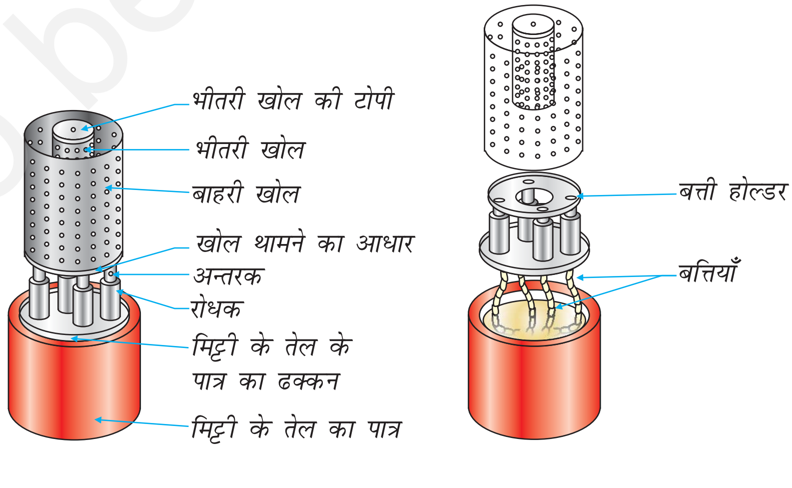

चित्र 1.15 – मिट्टी के तेल से गरम करने वाले लैम्प के भाग

© NCERT not to be republished